मध्यम वर्ग के लोग और अंग्रेज़ी शासन

भारत में अंग्रेज़ी शिक्षा देने के स्कूल कॉलेज बड़ी संख्या में खुलने लगे थे। सन् 1900 तक आते-आते देश में हज़ारों शिक्षक, वकील, डाक्टर, पत्रकार व सरकारी अधिकारी, कर्मचारी हो गए थे जो अंग्रेज़ी शिक्षा प्राप्त थे।

अंग्रेज़ शासन के काल में आगे बढ़ने के जो-जो मौके पैदा हुए थे - उनका लाभ ये लोग भी लेना चाहते थे। पर उनके सामने कई एक जैसी समस्याएं और बाधाएं आई जिनसे इन लोगों ने मिलकर संघर्ष किया। ये शिक्षित लोग भारत के मध्यम वर्ग के रूप में जाने गए। इन्हीं लोगों ने मिलकर सन् 1885 में अखिल भारतीय कांग्रेस नाम का संगठन भी बनाया।

1880 में 900 में से 16 को छोड़ कर बाकी सभी अधिकारी अंग्रेज़ थे

इसमें उन्होंने अपनी समस्याओं के साथ-साथ देश के अन्य वर्ग के लोगों की समस्याओं पर सरकार का ध्यान आकर्षित किया।

हमें सरकारी नौकरी के बराबर अवसर नहीं मिलते

शिक्षित लोगों ने सरकारी नौकरी पाने के तरीके में कई कमियां बताईं। वे कहते थे, "सरकार के सब बड़े अफसर अंग्रेज़ हैं। कहने के लिए तो सरकार कहती है कि कोई भी व्यक्ति परीक्षा में पास हो कर अफसर बन सकता है - पर हम भारतीय लोगों के लिए परीक्षा में बैठना कितना मुश्किल बना हुआ है। परीक्षा लंदन में होती है - वहां तक जाना क्या आसान है? परीक्षा लंदन और भारत दोनों जगह होनी चाहिए।"

"परीक्षा में बैठने की अधिकतम उम्र 19 वर्ष कर दी गई है। इतनी छोटी उम्र में हम भारतीय लोग अंग्रेज़ी पढ़ लिख कर परीक्षा के लिए तैयार नहीं हो सकते। परीक्षा में बैठने की अधिकतम उम्र बढ़ानी चाहिए।"

क्या हम बराबर के इंसान नहीं?

शिक्षित लोगों ने अंग्रेज़ों के भेद-भाव भरे व्यवहार की कड़ी आलोचना की। उन्होंने भेद-भाव के कई उदाहरण लोगों के सामने रखे। जैसे -

"हमें तो अंग्रेज़ लोग बराबर का इंसान ही नहीं मानते। कहने को उनके कानून में सब बराबर हैं।

पर अगर कोई अंग्रेज़ अपराध करे तो भारतीय जज उसे सज़ा नहीं दे सकता - जबकि अंग्रेज़ जज भारतीयों को सज़ा सुनाते है।"

"हम आए दिन यह भी देखते हैं कि बराबर के अपराध के लिए अंग्रेज़ लोग हल्की सज़ा में छूट जाते हैं।"

"सरकारी नौकारी में भारतीय अफसर के प्रमोशन की बारी आती है तो उसकी जगह अंग्रेज़ अफसर को प्रमोशन मिलता है .....।"

"रेल के डिब्बे, होटल, सिनेमा, पार्क ऐसी कई जगहों पर लिखा रहता है - 'केवल अंग्रेजों के लिए।. . . कुत्तों और भारतीयों का घुसना मना है।' क्या यह अपमान सहा जा सकता है?"

"हम तो फिर भी पढ़े-लिखे संपत्तिवान लोग हैं। अनपढ़ गरीब भारतीयों के साथ अंग्रेज़ और भी बुरा बर्ताव करते हैं। अपने भारतीय नौकरों को वे बात-बात में इस तरह पीट देते हैं जिससे कइयों की मौत हो चुकी है। ज़रा सी चीज़ के लिए वे नौकरों को गोली से उड़ा दें तो भी उनका कुछ नहीं बिगड़ता।"

भारतीयों को जीवन में आगे बढ़ने व सम्मान से रहने के अंग्रज़ों के बराबर अवसर न थे। यह बात बहुत चुभती थी। खासकर पढ़े-लिखे मध्यम वर्गीय लोगों को जो अपने आपको अंग्रेज़ों के बराबर बनाने की कोशिश कर रहे थे। वे इस भेद-भाव के खिलाफ कड़े शब्दों में बोलने लगे।

शिक्षित लोग यह सवाल भी उठाने लगे कि भारत का शासन किस प्रकार चलाया जाना चाहिए।

भारत में अंग्रेज़ शासन

आओ, देखे कि अंग्रेज़ों के समय में भारत का शासन कौन चलाता था और कैसे।

भारत इंग्लैंड के साम्राज्य का हिस्सा था इसलिए इंग्लैड की महारानी हमारी महारानी थी और भारत के लोग उनकी प्रजा थे।

इंग्लैंड की महारानी, इंग्लैड की संसद और सरकार भारत पर शासन करती थी। इंग्लैड से सीधे शासन तो नहीं हो सकता था क्योंकि भारत बहुत दूर था। इसलिए भारत के शासन की ज़िम्मेदारी कुछ अधिकारियों को सौंपी गई थी। सब से बड़ा अधिकारी इंग्लैड में रहता था। उसे "सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फॉर इंडिया" कहते थे।

भारत में रह कर काम संभालने वाला सबसे प्रमुख अधिकारी 'वाइसरॉय' या 'गवर्नर जनरल' कहलाता था। वह भारत मे अंग्रेज़ राज्य के लिए पूरी तरह ज़िम्मेदार था।

महारानी विक्टोरिया अपने एक भारतीय कर्मचारी के साथ

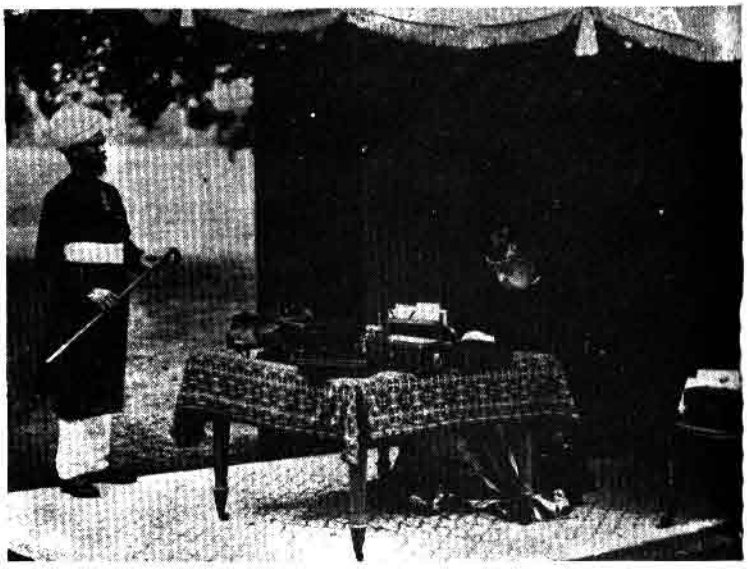

पर, अकेले वाइसरॉय के लिए भारत के शासन के सारे मामलों में सोच विचार कर निर्णय लेना और उन्हें लागू करना संभव नहीं था। उसकी सहायता व सलाह के लिए एक परिषद होती थी। परिषद में सरकार के महत्वपूर्ण अंग्रेज़ अधिकारी सदस्य थे।

एक वाइसरॉय और परिषद इतने लंबे चौड़े देश में शासन नहीं चला सकते थे। इसलिए भारत में अंग्रेज़ साम्राज्य को मुख्य रूप से तीन हिस्सों में बांटा गया। एक हिस्सा था बंगाल प्रेसीडेन्सी, दूसरा मद्रास प्रेसीडेन्सी और तीसरा बंबई प्रेसीडेन्सी। हर प्रेसीडेन्सी में एक 'गवर्नर' नियुक्त किया गया और हर गवर्नर की सहायता और सलाह के लिए एक एक परिषद बनाई गई। इन परिषदों में भी प्रेसीडेंसी के प्रमुख सरकारी अधिकारी सदस्य होते थे।

भारत के शासन में भारतीयों का हिस्सा

भारत पर अंग्रेज़ों का शासन था इसलिए शुरू से ही अंग्रेज़ अधिकारी शासन चलाते थे।

पर 1857 के विद्रोह के बाद अंग्रेज़ सरकार सोचने लगी कि अगर शासन चलाने में भारत के लोगों का साथ न लिया तो भारत के लोग अंग्रेज़ों का शासन स्वीकार नहीं करेंगे और विद्रोह करते रहेंगे। इसलिए 1861 से यह नियम बना कि वाइसरॉय और गवर्नरों की परिषदों में अंग्रेज़ अधिकारियों के अलावा दूसरे लोग भी सदस्य रखे जाएंगे और इनमें से कुछ भारतीय सदस्य भी होंगे।

परिषद की सदस्यता

भारत के शिक्षित लोग इस नियम से बिल्कुल संतुष्ट नहीं थे। आओ, उनकी शिकायतें समझें। वे कहते, "परिषदों में भारतीयों को रखा ज़रूर है। पर यह तो सिर्फ नाम के वास्ते है। परिषद के सदस्यों में सबसे अधिक संख्या में तो अंग्रेज़ अधिकारी ही हैं।

"अधिकारियों को छोड़ कर जो सदस्य बनाए हैं उनमें बहुत से भारत में रहने वाले अंग्रेज़ व्यापारी, मिल मालिक, चाय बगान के मालिक हैं।

"इस तरह परिषद में अंग्रेज़ ही अधिक हैं, भारतीय लोग तो तीन-चार ही होते हैं।

"हां, और जो भारतीय परिषद के सदस्य हैं उनका होना न होना बराबर ही है। वाइसरॉय को अपनी परिषद के सदस्य चुनने का अधिकार है इसलिए वह उन्हीं भारतीय लोगों को चुनता है जो अंग्रेज़ सरकार का समर्थन करते हैं।

"वाइसरॉय ने कई भारतीय राजाओं, नवाबों, उनके दीवानों और ज़मीदारों को अपनी परिषद का सदस्य बनाया है। ये लोग भारत की आम जनता का दुख दर्द समझते भी नहीं हैं और न ही अंग्रेज़ सरकार से लोगों के हित में शिकायत करते हैं। इनके परिषद में होने से क्या फायदा?"

भारत के शिक्षित लोगों को परिषद की सदस्यता से आपत्ति थी। यह आपत्ति और भी बढ़ जाती थी जब वे इंग्लैंड से तुलना करके देखते थे -

"भई, इंग्लैंड में जो संसद है उसके सदस्य लोगों द्वारा चुने जाते हैं। वे लोगों के प्रतिनिधि होते हैं। यह बहुत अच्छी बात है। भारत के लोगों को भी यह अधिकार मिलना चाहिए कि वे अपने प्रतिनिधि चुनें और उनके ज़रिए अपनी बात सरकार तक पहुंचाएं। लोगों की असली समस्याएं तभी सरकार द्वारा सुनी जाएंगी और हल की जाएंगी।

"हम नहीं चाहते कि वाइसरॉय या गवर्नर अपनी मर्ज़ी से परिषद के सदस्य चुनें। परिषद के सदस्य लोगों द्वारा चुने जाने चाहिए।"

वाइसरॉय और गवर्नर कौन थे?
उनकी परिषदों के सदस्य कैसे चुने जाते थे?
शिक्षित लोगों को परिषद की सदस्यता में क्या कमियां दिखीं?
इन कमियों को दूर करने के लिए उनके क्या सुझाव थे?

परिषद के अधिकार

भारत के शिक्षित लोगों ने परिषदों के काम करने के तरीके पर भी सवाल उठाए। ये सवाल क्या थे, आओ समझें।

"परिषद में भारतीयों की संख्या बढ़ भी जाए तो भी क्या फायदा होगा? परिषद को कोई अधिकार ही नहीं है। उसका तो इतना ही काम है कि अगर वाइसरॉय या गवर्नर कोई बात विचार के लिए परिषद के सामने रखे तो परिषद बातचीत कर ले और अपनी राय बता दे।"

"हां भई। परिषद के सदस्य अगर अपनी तरफ से किसी विषय पर चर्चा करना चाहें तो उन्हें पहले सरकार से पूछना पड़ता है। वाइसरॉय या गवर्नर मना कर दें तो सदस्य उस विषय पर चर्चा नहीं कर सकते। ऐसी परिषद किस काम की?"

"अरे, अगर परिषद की दी हुई सलाह सरकार के लिए मानना ज़रूरी होता तो भी कोई बात बनती। पर परिषद की सलाह का इतना भी महत्व नहीं है। वाइसरॉय चाहे तो परिषद की सलाह ठुकरा के अलग निर्णय ले सकता है।"

"यह सब तो है ही - पर सब से ग़लत बात तो यह है कि परिषद के सदस्य सरकार के बजट पर कोई प्रश्न नहीं कर सकते। सरकार हम लोगों पर कर लगा के पैसा वसूल करती है और अपनी मर्ज़ी से खर्च करती है। पैसा हमारा है। कितना वसूल किया जाएगा, किस पर खर्च किया जाएगा - इन मामलों में हमारी राय भी तो लेनी चाहिए।"

लोगों की सरकार

इन बातों से हम समझ सकते हैं भारत के शिक्षित लोग अंग्रेज़ शासन के तरीके से कितने असंतुष्ट थे। वे चाहते थे कि जिस तरह इंग्लैंड में सरकार वहां के लोगों के प्रति जवाबदार होती है वैसे ही भारत में भी सरकार भारत के लोगों के प्रति जवाबदार हो।

शुरू में ऐसी उम्मीद भी बनी थी कि अंग्रेज़ भारत के लोगों को जवाबदार सरकार बनाना और चलाना सिखाएंगे। पर बहुत जल्दी यह उम्मीद खत्म हो गई और लोग समझ गए कि अंग्रेज़ भारत के लोगों के विकास की बातें करते ज़रूर हैं पर वे अपने साम्राज्य के विकास के लिए ही शासन करते हैं।

इंग्लैंड भारत पर अपने हितों के लिए शासन कर रहा था, भारत के हितों के लिए नहीं, इसलिए भारतीयों को शासन में पूरा हिस्सा देना संभव ही नहीं था।

हां, भारत के शिक्षित लोगों के असंतोष को देखते हुए समय समय पर कुछ प्रशासनिक सुधार किए गए। सन् 1861, 1892, 1909, 1919, 1935 में ऐसे कानून बने जिनसे शासन में भारतीयों की हिस्सेदारी व हक थोड़े बहुत बढ़े।

पर इस दौरान यह स्पष्ट हो गया था कि भारतीय लोगों के हितों के लिए शासन चलाना है तो अंग्रेज़ शासन से स्वतंत्र होना होगा। अब लोग स्वराज्य के हक के लिए लड़ने लगे और अंग्रेज़ शासन हटा कर भारतीयों का स्वतंत्र राष्ट्र बनाने की कोशिश में जुट गए।

स्वतंत्रता के बाद

तुम अपने अनुभव और जानकारी के आधार पर बताओ कि मध्यम वर्ग के शिक्षित लोगो ने जो समस्याएं उठाई थी उनमे से कौन सी अब हल हो गई है - क्या अब भारतीयो को नौकरी मे पूरे अवसर मिलते है? क्या देश की सरकार पर लोगो का नियंत्रण है?

अभ्यास के प्रश्न

1. अंग्रेज़ शासन के समय मे सरकारी नौकरी पाना भारतीयो के लिए कठिन क्यों था?
2. अंग्रेज़ो और भारतीयो के बीच भेद-भाव किस तरह से होता था?
3. अंग्रेज़ शासन के नियमो मे ऐसी क्या बाते थी जिनके कारण भारत के लोग अंग्रेज़ सरकार पर नियंत्रण नही कर सकते थे?
4. भारत के लोग चाहते थे कि सरकार उनके प्रति जवाबदार हो। यह स्वतंत्रता के बगैर संभव क्यों नही था?